हिन्दी–पीड़ा

मौहर सिंह
रा.ज.सं. रूड़की

अभिलाषा दिल में होती है, है हिन्दी का सम्मान बढ़े।
हर मानव के मुख से हरदम, हिन्दी का गौरव ज्ञान बढ़े।।

हृदय में उठते हिचकोले, हिन्दी कैसे हो जन–जन की।
तब सहसा दिल में उठती है, एक दर्द लिए पीड़ा मन की।।

जो महल दुमहलों में रहते, वे अंग्रेजी के कायल है।
झोंपड़ियों में रहने वाले, इस अंग्रेजी से घायल हैं।।

हिन्दी में निन्द्रा नहीं आती, सपने भी चाहें अंग्रेजी।
अंग्रेजी मय सब हो जाये, खेलें खायें सब अंग्रेजी।।

है दौड़ लगी अंग्रेजी पर, दुःख रोती अपनी हिन्दी है।
अमरीकन डॉलर अंग्रेजी, अखबारी कागज हिन्दी है।।

सब दौड़ रहे बेहोशी में, अंग्रेजी अच्छी भाषा है।
हिन्दी लिबास को फेंक दिया, अब तो इंगलिश ही आशा है।।

अंग्रेजी दूध मलाई है, और बोटी खस्सी बकरे की।
हिन्दी वो सूखी रोटी है, जो लगती है बिन जायके की।।

सब तरफ दीखती अंग्रेजी, अंग्रेजी बिन सब सूना है।
हर शिक्षा है अंग्रेजी मय, हिन्दी को तो बस रोना है।।

हम सींच रहे हैं बचपन को, अंग्रजी की घुट्टी देकर।
हिन्दी का गौरव गान करें, अंग्रेजी में भाषण देकर।।

किलकारी भी हो इंगलिश में, तुतलाते स्वर की मांग यही।
जो हिन्दी में हैं बात करें, अनपढ़ कहलाते लोग वही।।

कानून है पूरा इंगलिश में, ना बात समझ पाता कोई।
हिन्दी के अध्यापक को भी, हिन्दी से प्रेम नहीं कोई।।

हम हिन्दी दिवस मनाते हैं, ये अपना मन समझाने को।
हिन्दी को हम अपनाएंगे, ये कहकर दिल बहलाने को।।

अब तक आंसू टपकाए हैं, हिन्दी का मान बढ़ाने को।
पर अब तो सचमुच कार्य करें, हिन्दी को खूब बढ़ाने को।।

है कार्य नहीं कोई मुश्किल, यदि किया जाये सच्चे दिल से।
हिन्दी भारत में छायेगी, यदि करें सभी प्रण मिल करके।।

है मौहर सिंह दिल से चाहे, जन–जन की भाषा हो हिन्दी।
भारत माता का हर जन–जन, बोले हिन्दी हिन्दी हिन्दी।।